इकाई-4
पढ़ना और समझना

1. गहन अध्ययन 2. अध्याहार 3. सार 4. अन्वय 5. विश्लेषण 6. व्याख्या 7. अनुवाद

गहन अध्ययन

मौखिक और लिखित संप्रेषण की पहली शर्त है–गहन अध्ययन। जब तक रचना की गहराई तक पहुंचकर सकारात्मक और नकारात्मक पहलुओं पर गंभीर चिंतन नहीं किया जाता तब तक मन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। मन पर पड़े प्रभाव द्वारा किसी नए तथ्य की खोज करना ही चिंतकों का उद्देश्य होता है। कहावत है–'जिन खोजा तिन पाइया, गहरे पानी पैठ', अर्थात् समुद्रादि के गहरे पानी तक जाने पर ही खोजने पर रत्नों और सच्चे मोतियों की प्राप्ति होती है। किसी भी विषय का अध्ययन करना और गहराई से अध्ययन करना–दोनों में ज़मीन आसमान का अंतर है। अक्सर हम सुबह का अखबार जल्दी-जल्दी में पढ़ते हैं–मुख्य खबरें पढ़ कर छोड़ देते हैं, उनका गहराई से अध्ययन नहीं करते। परन्तु जब कोई खबर स्वयं से जुड़ी हो या अपने परिचितों से या अपने इलाके से जुड़ी हो तो उस खबर का दो-तीन बार गहन अध्ययन करते हैं। कब, क्यों कहाँ, कैसे, क्या आदि कारण सहत उत्तर पाना चाहते हैं। यदि किसी व्यक्ति ने आत्महत्या की है तो क्यों की है? क्या वह बीमार था, अपनी पत्नी या बच्चों से दुखी था, झगड़ालू पत्नी की वजह से परेशान था, कारोबार घाटे में चल रहा था, कर्ज का शिकार था, सब पर बोझ था, आदि गहराई में जाकर मन में उठने वाले सभी प्रश्नों का उत्तर पाना चाहते हैं। आत्महत्या के केस का गहन अध्ययन करके हो सकता है हमें सही कारण मिल सके। 'क्राइम पैट्रोल' सीआईडी कार्यक्रमों के सफल संयोजन और आकर्षण प्रस्तुति के पीछे सबसे बड़ा कारण है कि कार्यक्रम की पूरी टीम उस कार्यक्रम में पूरी तरह खोजबीन करके अपराधियों की तलाश करके, उन्हें उनके जुर्म की सजा दिलाती है।

'रामायण' पर कई कवियों ने अपनी रचनाएं रचित की हैं, परन्तु प्रत्येक रचना में हमें कुछ नया मिलता है। मैथिली शरण गुप्त ने 'साकेत' शीर्षक प्रबन्ध

Scanned with CamScanner

काव्य में लक्ष्मण पत्नी उर्मिला के आँसुओं को वाणी दी। उन्होंने रामायण का गहन अध्ययन करके पाया कि सीता का त्याग (राजमहल छोड़कर अपने पति के साथ चौदह वर्ष का बनवास) उतना बड़ा त्याग नहीं है, जितना बड़ा त्याग लक्ष्मण-पत्नी उर्मिला का है। दोनों बहनें थी, दोनों राजमहलों में पली-बढ़ी थीं, दोनों बहनों का एक ही समय में दोनों भाइयों (राम और लक्ष्मण) के साथ विवाह सम्पन्न हुआ था। कैकेयी को दिए वचन की पूर्ति के लिए जब राजा दशरथ को अपने दिल पर प्रत्थर रखकर 14 वर्ष के बनवास की आज्ञा दी। राम के साथ लक्ष्मण भी बनवास के लिए तैयार हो गए। दोनों भाइयों की पत्नियों (सीता और उर्मिला) ने भी जब बनवास की बात सुनी तो दोनों बहनों ने अपने-अपने पति से राजमहल छोड़कर बन गमन की अनुमति माँगी। रामजी ने तो सीता को अपने साथ बनगमन की अनुमति दे दी परन्तु उर्मिला को लक्ष्मण ने अपने साथ ले जाने से यह कह कर इन्कार कर दिया कि तुम्हारे होते हुए मेरा मन तुम्हारे प्रेम में अनुरक्त होगा और मैं अपने भगवान स्वरूप बड़े भाई की सच्चे मन से सेवा नहीं कर पाऊंगा। पूरे चौदह वर्ष अपने पति को छोड़कर राजमहलों में रहकर उर्मिला ने विरह के दुख में आँसू बहाए और पति सुख का त्याग किया। वह त्याग मैथिलीशरण गुप्त की दृष्टि में सीता के त्याग से महान था।

इसी प्रकार यशोधरा (गौतम-पत्नी) के जीवन का गहन अध्ययन करके 'यशोधरा' शीर्षक काव्य में यशोधरा के आँसुओं को वाणी थी–

"सिद्धि हेतु स्वामी गए, यह गौरव की बात।
पर चोरी-चोरी गए, यही बड़ा व्याघात।"

तुलसी दास की पत्नी (रत्नावली) और चैतन्य महाप्रभु की पत्नी विष्णु प्रिया पर नए कवियों को काव्य लिखने के लिए प्रेरित किया।

इलैक्ट्रॉनिक/प्रिण्ट मीडिया में सूचनात्मक/सर्जनात्मक लेखन दोनों प्रकार के लेखन के लिए जब तक किसी घटना/स्थिति/विषय का सूक्ष्म अवलोकन और गहन अध्ययन नहीं किया जाएगा तब तक कार्यक्रम (धारावाहिक, फिल्म, नाटक, समाचार, इंटरव्यू आदि) का सफल संयोजन और प्रस्तुति संभव नहीं हो पाएगी। महाभारत पर अब तक कई धारावाहिक और फिल्में बन चुकी हैं, परन्तु हर धारावाहिक और कार्यक्रम में हम मौलिकता देखते हैं। आमिर खान की फिल्में और धारावाहिक (सत्यमेवजयते) दर्शकों द्वारा इसीलिए पसंद किए जाते हैं क्योंकि वे समस्या की जड़ तक जाने के लिए रिसर्च, सर्वे, इंटरव्यू आदि लेकर किसी भी कार्यक्रम को विश्वसनीय बनाकर पेश करते हैं। दृश्य संयोजन,

म्यूजिक और संवाद किसी भी कार्यक्रम को जीवंत और प्रभावशाली बना देते हैं। करोड़ों रुपए के बजट की फिल्मों के निर्माण में अगर विषय का गहन अध्ययन न किया जाए तो कार्यक्रम निर्माता को चूना लग जाता है। विषय का गहन अध्ययन करने के साथ-साथ लोगों की रुचियों-जरूरतों को भी ध्यान में रखना पड़ता है। जिस प्रकार कोई कारोबार खोलने से पहले कारोबारी को स्वयं इस कारोबार की व्यावहारिक जानकारी जरूरी होती है उसी प्रकार कार्यक्रम निर्माता, स्क्रिप्ट टाइटर के लिए भी गहन अध्ययन अत्यंत आवश्यक है। इतना ही नहीं राजनीति के क्षेत्र में महान राजनीतिज्ञों/विश्लेषकों/धार्मिक उपदेशकों, अध्यापकों, विशेषज्ञों (किसी भी क्षेत्र) को अपने-अपने क्षेत्र का गहन अध्ययन करना अति आवश्यक है। हमारे PM मोदी जी अपने क्षेत्र के गहन अध्ययन के बल चुनावी दौर में पूरी आत्मविश्वास के बल पर रैलियों को संबोधित करके भारी मात्रा में लोगों का वोट बैंक हासिल करके प्रधानमंत्री के पद पर सुशोभित हो सके हैं।

समाचार पत्रों के सम्पादकीय, समाचार, फीचर आदि लेखों को लिखने के लिए विषय का सम्यक् गहन अध्ययन अति आवश्यक है। समाचार-पत्रों में छपे लेखों पर टिप्पणी देने से पहले किसी भी समाचार या लेख का गहन अध्ययन करके किसी निष्कर्ष पर पहुंचना ज़रूरी होता है। संप्रेषक के गहन अध्ययन की कमी की स्थिति में संप्रेषण की क्रिया सुचारू रूप से नहीं हो पाती है।

कहा जा सकता है कि कुशल लेखक और कुशल बक्ता बन कर ख्याति प्राप्त करने के लिए गहन अध्ययन अति आवश्यक है।

Scanned with CamScanner